IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

उच्च शिक्षा के छात्र–छात्राओं की कम्प्युटर आधारित शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

नेहा शर्मा[1] शोध छात्रा

आजीवन शिक्षा प्रसार एवं समाज कार्य अध्ययनशाला जीवाजी विश्वविद्यालया ग्वालियर

डॉ. रमा त्यागी[2] शोध निर्देशिका

प्राचार्य, इंस्टीट्यूट ऑफ प्रोफेशनल एंड टेक्नीकल एजुकेशन, पिपरौली, ग्वालियर, (म.प्र.)

शोध सार – प्रस्तुत शोध उच्च शिक्षा के विद्यार्थियों की कम्प्युटर आधारित शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन विषय पर किया गया। इस हेतु प्रतिदर्श ग्वालियर जिले से लिए गए। कुल 250 छात्र और 250 छात्राएँ थी। आंकड़ों का संकलन करने के लिए कम्प्युटर मनोवृत्ति मापनी का उपयोग किया गया। आंकड़ों का विश्लेषण करने के लिए आनुमानिक सांख्यिकी विधियों की सहायता ली गयी। टी परीक्षण से दोनों समूहों छात्र और छात्राओं में सार्थक अंतर निकाला गया। परिणाम मे पाया गया की लगभग सभी प्रतिदर्श कम्प्युटर शिक्षा के प्रति सकारात्मक मनोवृत्ति प्रदर्शित किए। साथ ही छात्रों की मनोवृत्ति छात्राओं की तुलना में अधिक पायी गयी।

मुख्य शब्द – उच्च शिक्षा, कम्प्युटर, मनोवृत्ति।

प्रस्तावना – हर देश आज खुद को विकसित करने के लिए कम्प्युटर आधारित शिक्षा को प्रमोट कर रहे हैं, क्योंकि तकनीकी की सहायता से ही विकास संभव है। आज के देशों ने जितना विकास किया है उसमें तकनीकी का पूरा योगदान है। कम्प्युटर की सहायता से ही हर कार्य हो रहे हैं। प्रत्येक दिन तकनीकी के क्षेत्र में एडवांसमेंट हो रहा है। उस एडवांसमेंट की सहायता से दिन प्रतिदिन निश्चित तौर पर पुराने वर्जन के आगे नए नए वर्जन कम्प्युटर या अलग अलग तरह के एप्स के आ रहे हैं। जो देश टेक्नोलॉजी में पीछे हैं वह हर क्षेत्र में पीछे हैं वहां की आर्थिक स्थिति भी कमजोर रहती है, अतः टेक्नोलॉजी में आगे होने के लिए कम्प्युटर आधारित शिक्षा देना अति आवश्यक है। जिस देश की जनसंख्या कम्प्युटर के साथ परिचित होती है, और अपने कार्य को कम्प्युटर की सहायता से करती है वह देश निश्चित तौर पर नई नई टेक्नोलॉजी के साथ फ्रेंडली माहौल बनाता चला जाता है और वहां के लोग विकास में देश के लिए सहयोगी होते हैं। पश्चिमी देशों में कम्प्युटर की टेक्नोलॉजी भारत या एशिया के देशों से अति उत्कृष्ट है, वहां पर कोई टेक्नोलॉजी जब आती है, और वहां के लोग सब जान लेते हैं, समझ लेते हैं, उसके कुछ सालों बाद एशिया के देशों अर्थात भारत जैसे देशों में और टेक्नोलॉजी आती है। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में कम्प्युटर को लाने से छात्रों में अध्ययन अध्यापन दोनों ही सरल हुआ है, यह ना केवल छात्रों के लिए बल्कि शिक्षकों के लिए उपयोगी है, क्योंकि प्रवेश में परीक्षा में या मूल्यांकन में तीनों कार्यों में यह शिक्षकों और छात्रों दोनों के लिए आसान कार्य करता है, लाखों

लाख कॉपियों का मूल्यांकन मिनटों में कम्प्युटर की सहायता से संभव होता है। छात्र अपने परिणाम कम्प्युटर की सहायता से आसानी से देख पाते हैं। जल्दी परीक्षा करना और जल्दी से रिजल्ट देना भी कम्प्युटर की सहायता से वर्तमान में अति आवश्यक और उपयोगी हो गया है। यह समय कम लेता है, और इसमें सटीकता भी ज्यादा होती है।

उच्च शिक्षा में रोजगार प्राप्त करने के लिए छात्रों को कम्प्युटर आधारित शिक्षा की आवश्यकता होती है साथ ही एक नए पक्ष में अगर छात्र कम्प्युटर आधारित शिक्षा नहीं ले रहे हैं तब भी कम्प्युटर की सहायता से कम्प्युटर सहायक शिक्षा प्रदान करनी चाहिए क्योंकि किसी भी प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने के लिए कम्प्युटर आज उपयोगी उपकरण है। कम्प्युटर की सहायता से शिक्षक जब शिक्षण करते हैं तो छात्रों को आसानी होती है। किसी भी संप्रत्यय को सीखने के लिए छात्रों को किताबें पलटने की जरूरत नहीं पड़ती। आज ई–बुक व ऑनलाइन लाइब्रेरी की सहायता से (e-content) के माध्यम से छात्र आसानी से सीख सकते हैं।

अध्ययन विधि – अध्ययन विधि में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि के अंतर्गत तुलनात्मक विधि का प्रयोग किया गया। इस शोध पत्र हेतु 250 प्रतिदर्श का चयन किया गया और अध्ययन हेतु स्तरीकृत यादृ क्षिक विधि का प्रयोग किया गया। आंकड़ों के संग्रह के लिए डॉ. ताहिरा खातून और मनिका शर्मा द्वारा बनाए गए कम्प्युटर मनोवृत्ति मापनी का उपयोग किया गया।

उद्देश्य – शासकीय महाविद्यालयी छात्र और छात्राओं की कम्प्युटर शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना – शासकीय महाविद्यालयी छात्र और छात्राओं की कम्प्युटर शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नही है।

आंकड़ों का विश्लेषण – आंकड़ों के विश्लेषण हेतु अनुमानिक सांख्यिकी की विधयों तथा वर्णनात्मक विधियों का उपयोग किया गया।

आंकड़ों का विश्लेषण –

छात्राओं एवं छात्रों की कम्प्युटर शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति की तुलना चर

चर	संख्या	कम्प्युटर शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति		टी मान$_{(500,498)}$
		माध्य	मानक विचलन	
छात्रायें	250	67.89	9.61	-3.095
छात्र	250	70.66	10.35	

***0.01 विश्वास स्तर पर सार्थक

इस तालिका में छात्राओं एवं छात्रों की कम्प्युटर शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति के विवरणात्मक और आनुमानिक सांख्यिकीय विश्लेषण को दर्शाया गया है। इस तालिका के अंतर्गत दोनों समूहों के माध्य (mean), मानक विचलन (standard deviation) तथा टी–टेस्ट के परिणाम को प्रदर्शित किया गया है। उपरोक्त तालिका से यह देखा जा सकता है कि छात्राओं का कम्प्युटर शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति का माध्य 67.89 और मानक विचलन 9.61 है तथा छात्रों का कम्प्युटर शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति का माध्य 70.66 और मानक विचलन 10.35 है। मापनी में दिए गए मानक प्राप्तांकों के अनुसार छात्राओं एवं छात्रों की कम्प्युटर शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति सकारात्मक हैं। परिणामों के विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि छात्राओं एवं छात्रों की कम्प्युटर शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति ($t_{(500,498)} = -3.$

095, $p<0.01$) में सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर है। साथ ही आँकड़ों के विश्लेषण से यह पाया गया है कि छात्रों ($M = 70.66, SD = 10.35$) की कम्प्युटर शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति छात्राओं ($M = 67.89, SD = 9.61$) की कम्प्युटर शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति की तुलना में अधिक है। अतः निर्मित परिकल्पना "उच्च शिक्षा के विद्यार्थियों की कम्प्युटर शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" पूर्णतः अस्वीकृत सिद्ध होती है, और वैकल्पिक परिकल्पना "छात्रों की कम्प्युटर शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति छात्राओं से अधिक है" स्वीकृत की जाती है।

चित्र संख्या 1 छात्राओं एवं छात्रों की कम्प्युटर शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति

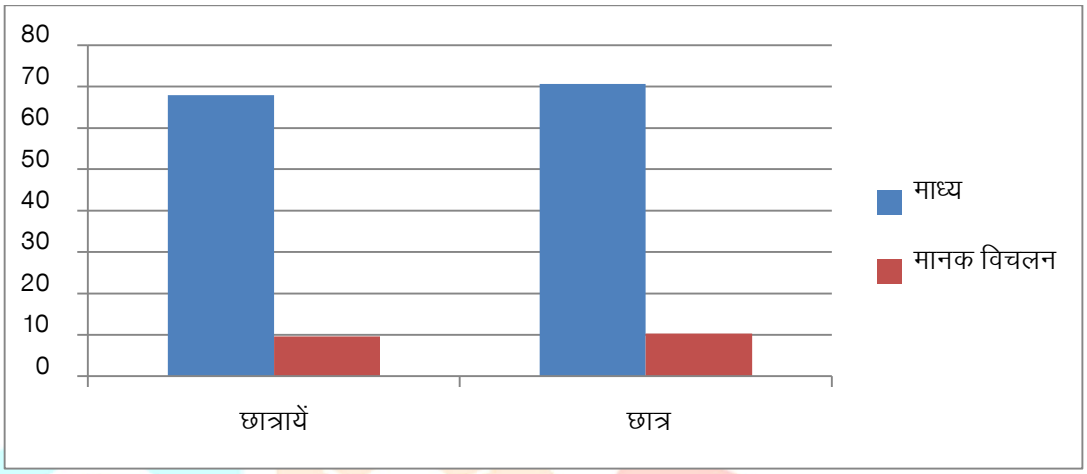

विवेचना – कम्प्युटर आधारित शिक्षा का अर्थ कम्प्युटर उपकरणो की सहायता या कम्प्युटर का आधार लेकर पढ़ने और पढ़ाने की प्रक्रिया को संचालित करने से है। कम्प्युटर शिक्षा के प्रति "मनोवृत्ति का निर्माण इस बात पर निर्भर करता है कि प्रतिदर्श कहा का है ? अर्थात् ग्रामीण/शहरी प्रतिदर्श के समाज में मीडिया की पहुच कितनी है ? शिक्षा का स्तर क्या है ? प्रतिदर्श किस आय वर्ग से सम्बन्धित है ? इन सभी कारकों से कम्प्युटर शिक्षा के प्रति सकारात्मक या नकारात्मक कोई भी मनोवृत्ति परिणाम में प्राप्त हो सकती है"। वी. टी. (2021)

इस शोध में छात्राओं की मनोवृत्ति छात्रो से कम पायी गयी। यह परिणाम शर्मा (2014) के परिणाम की छात्राओं में तकनीकी शिक्षा के प्रति कम मनोवृत्ति पायी जाती है पुष्ट करता है। इन परिणामों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि उच्च शिक्षा के विद्यार्थियों में कम्प्युटर शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति सामान्य है साथ ही जिन उप समूहों में मनोवृत्ति कम है उनमे उसका कोई न कोई कारण है अतः अगर इन कारणों को हटाया जाए तब निश्चित रूप से प्राथमिक स्तर से बालकों में उच्च मनोवृत्ति का विकास किया जा सकेगा।

सामान्यतः मनोवृत्ति का निर्माण और परिवर्तन समाज के प्रकार्यात्मक संरचना पर आधारित है। वर्तमान में इन्टरनेट मास मीडिया ने न केवल विद्यालयी जबकि महाविद्यालयी छात्रों को प्रभावित किया है। विजय भाई (2015) के अनुसार अत्यधिक डिजिटल उपकरणों की उपलब्धता से शारीरिक क्रियाओं में कमी देखी गई है, प्रत्येक उम्र वर्ग के व्यक्ति शारीरिक कार्य की जगह डिजिटल उपकरणों का उपयोग कर रहे। वर्तमान में कम्प्युटर चलाने के लिए किसी तरह का पढ़ा लिखा होना आवश्यक नही रह गया है आज कम पढे लिखे लोग भी इसे अच्छे से उपयोग कर रहे हैं।

निष्कर्ष – मनोवृत्ति किसी को विरासत में नहीं मिलती है, यह सामाजिक अधिगम के कारण सीखा जाता है या यू कहे की यह समाज के साथ भागीदारी से व्यक्ति अपने अनुभव के कारण विकसित करता है। समान्यतः देखा जाता है की बालक के समाजीकरण के समय उसे किए जाने वाले व्यवहार और न किए जाने वाले व्यवहार सिखाये जाते है। इन्हे अँग्रेजी में डस और डोंट्स कहा जाता है। यही

वह जगह है की बालक किए जाने वाले व्यवहार के लिये अनुकूल और न किए जाने वाले व्यवहार के लिए प्रतिकूल ढंग से सोचने लगता है। इस तरह की सोच में बालक के स्थायी पन तब आता है, जब वह अपने सोच के अनुसार अनुभव भी करता है अगर कोई बालक अपने सोच के अनुसार अनुभव नहीं करता है तो संभव है की उसकी मनोवृत्ति बदल जाए। यही से बालक की मनोवृत्ति का बनना शुरू होता है जिसमे आगे के उम्र में और भी कारक आते है जो या तो मनोवृत्ति मे स्थायी पन लाते है या उसकी संरचना को कमजोर करते हुए बदल देते हैं।

भावी शोध हेतु सुझाव – प्रस्तुत अध्ययन को सम्पन्न करते समय शोधकर्ता ने यह अनुभव किया कि किसी भी विषय पर किया गया कोई अध्ययन कभी अपने आप में पूर्ण नही होता है। इस अपूर्णता को दूर करने के प्रयास किए जाते हैं इसी क्रम में आने वाले समय में शोध के इन क्षेत्रों मे शोध किए जा सकते हैं।

1. आगामी शोध कार्य में ग्वालियर जिले या विशेष से आँकड़े संकलित करने के बजाय राष्ट्रीय स्तर पर आँकड़ों का संकलन किया जा सकता है।
2. प्रस्तुत अध्ययन में शहरी और ग्रामीण पृष्ठभूमि तथा उनकी सामाजिक आर्थिक स्थिति पर अध्ययन नही किया गया है, आगे इसे शामिल करते हुए अध्ययन किया जा सकता है।
3. प्रस्तुत शोध में केवल उच्च शिक्षा के विद्यार्थियों की कम्प्युटर शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति का अध्ययन किया गया है। इसे कैसे बेहतर किया जाये उस तरह के किसी प्रशिक्षण का उपयोग नहीं किया गया है। भविष्य में शोधकर्ता ऐसी विधियों का निर्माण कर सकते हैं ।

संदर्भ –

1. एल्सेवीर डॉट कॉम (2022) कम्प्युटर के संदर्भ में किए गए अध्ययन कोरोना काल में।
2. मेंटल (2022) कम्प्युटर एडुकेशन एंड एट्टीट्यूड टूवर्ड कम्प्युटर एल्सेवीर
3. जान (2022) कम्प्युटर एडुकेशन का महत्व कोरोना काल में स्कूल और कॉलेज दोनों स्तर पर, एल्सेवीर
4. बेहरा, एस. के. (2011), द एडीडयूड ऑफ सेकेन्डरी स्कूल स्ट्रडेन्ट टूवर्ड कम्प्युटर एजूकेशन इन क्योन्जर डिस्टीक ऑफ उड़ीसारू ए स्टडी, वोल्यूम–3(32), 0974–2852
5. जाखड़, एस. (2010), ए स्टडी ऑफ साइको सोशल कंडीशंस एंड एटीट्यूड ऑफ लर्नर्स टूवर्ड इंटरनेट बेस्ड लर्निंग. शोध गंगोत्री।
6. बूच, एम.बी. (2009), द मेजरमेट ऑफ एटीटयूडस ऑफ सैकेण्डरी स्कूल टीचर्स टुवर्डस दी टीचिंग प्रोफेसन, जनरल ऑफ एजुकेसन, डिपार्टमेन्ट ऑफ क्यूरीकुलम टीचिंग एण्ड लर्निंग युनिवर्सिटी ऑफ ग्रेरोन्टों।
7. रिकार्ड, जी. एल. (2006), हाई स्कूल स्ट्रडेन्ट एट्टीयूड अवाउट फिजिकल एजुकेशन. स्पोर्ट एजुकेशन एण्ड सोसाइटी, वोल्यूम–11(4) ,जार्ज मासोम युनिवर्सिटी यू.एस.ए.।
8. तिवारी और भट्ट (2008), अध्यापक की परिवार नियोजन के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन. आगरा विश्वविद्यालय, आगरा (उ.प्र.)।